बच्चे जानते हैं कि बाप परमपिता परमात्मा पढ़ा रहे हैं। भक्तिमार्ग में गायन भी होता है। बाबा कल्प–2 आते हैं नई दुनिया स्थापन करने। बच्चे जानते हैं कि भारत में ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। अब जो इतने धर्म हैं वो सब वहाँ नहीं होते हैं। 5000 वर्षों की बात है कि सिर्फ हमारा ही खण्ड था। और कोई खण्ड नहीं था। अब फिर हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम बच्चे जानते हो कि अब स्वर्ग–नर्क किसको कहा जाता है। बाबा आया हुआ है। कहते हैं कि मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। बाप ही ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। शांति–पवित्रता का सागर है। उनसे वर्सा भी मिलना है। यह भी पता पड़ा है कि हम ही देवताएँ थे, फिर हम ही देवताएँ बनेंगे। पहले तो तुमको कुछ भी पता नहीं था। बाप ही आकर बताते हैं। महिमा ही सारी उनकी है। तुम बच्चे ही जानते हो कि कैसे हम राजाई गंवाते हैं, कैसे फिर हम पाते हैं। 5000 वर्ष पहले यह स्वर्ग का गेट खुला था, अब फिर खुलता है। मनुष्यों की बुद्धि काम नहीं करती है। ड्रामा अनुसार जिनकी तकदीर में है वो ही समझ लेते हैं। बच्चों को पता है कि क्या होता है। यह जो भी इतने खण्ड हैं वो सभी अभी खलास हो जावेंगे। अमरिका कितनी बड़ी है। फिर नहीं रहेगी। बच्चों को दिन–प्रतिदिन सा० होता रहेगा। यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। कहते भी हो कि बाबा, हम 5000 वर्ष पहले मिसल अब भी राज्य पाने पुरुषार्थ कर रहे हैं। खुशी होती है कि यह सब नहीं रहेगा। बाप कहते हैं कि तुम अपना राज्य स्थापन कर रहे हो, जहाँ पर कोई खिटपिट नहीं रहती है। बाहुबल से कोई भी विश्व के मालिक बन नहीं सकते। हैं तो भाई–2; परन्तु आपस में कितने कड़े–2 दुश्मन हैं। क्रिश्चियन्स को आपस में लड़वा कर माखन तुम खा जावेंगे। बच्चों को अब समझ में आया है कि यह आपस में सब लड़ कर खत्म हो जावेंगे। फिर राजाई भारत को मिलनी है। तुम साक्षी होकर देखो। एक्ट भी बजानी है। तुम जानते हो कल्प पहले मुआफिक स्थापना–विनाश होना है। यह चक्र फिरता रहता है। एक सेकिंड ना मिले दूसरे से। यह ज्ञान भी तुम्हीं बच्चों को है। जानते हो इस पढ़ाई से हम विश्व का मालिक बनते हैं। यह ल०ना० सतयुग के मालिक थे। इन्होंने कैसे राजाई ली यह तुम्हीं को मालूम है। बाप कहते हैं इसी समय मैं एक्ट में आता हूँ। यह तुम जानते हो कि इस रथ द्वारा बाबा हमको पढ़ाते हैं। हम आत्माएँ पढ़ती हैं। यह एक ही बार पढ़ाते हैं। ऊँच ते ऊँच बाबा है तो पढ़ाई भी ऊँच पढ़ाते होंगे। तुम्हारी कितनी गुप्त कमाई है। पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम होती है। तुम जानते हो कि हम यह बनते हैं। वहाँ पर पैसों आदि की गिनती नहीं होती है। यह भी समझते हो कि शास्त्रों में यह सब बातें नहीं हैं। यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी फायदा नहीं है। वो तो कोई पढ़ाई नहीं है। एम–ऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं होता। वेद पढ़ने से क्या मिलेगा? कुछ भी नहीं। टीचर चाहिए ना और एम–ऑब्जेक्ट चाहिए। हर एक अपने दिल से पूछ सकते हैं कि हम कितने श्रेष्ठ (बने) हैं, कितना पढ़ते हैं। बुद्धि ही मोटी है तो टीचर भी क्या करेगा! कहेंगे, तकदीर। जितना श्रीमत पर चलेंगे उतना ही श्रेष्ठ बनेंगे। डिफीकल्टी तो कोई है नहीं। शरीर निर्वाह तो करना ही है। बुद्धि में है कि पावन बनना है। बाबा कहते हैं कि सवेरे उठकर याद करो। जानते हो कि बाप ही की याद से हम विकर्माजीत बनेंगे। इसलिए ही बाप को याद करना पड़ता है। तुम जानते हो कि हम शिवबाबा पास आए हैं। वो हमको ब्रह्मा तन द्वारा पढ़ाते हैं। यह है पढ़ाई, जिससे तुम एवर वेल्दी बनेंगे। योग से एवर हेल्दी बनेंगे। स्वर्ग में तो सदैव खुशी ही खुशी है। कहते भी हैं कि स्वर्ग पधारा; परन्तु बाप अभी तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। अभी तुम यह शरीर छोड़ कर घर जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी आवेंगे नई दुनिया में। बाप से प्रतिज्ञा करनी है। स्वर्ग चलना है तो पावन ज़रूर बनना है। बाबा, हम तो पवित्र जरूर बनेंगे। तुम बच्चे राजधानी स्थापन कर .....
.....